301hi06

6

गद्य कैसे पढ़ें!

दैनिक जीवन में हम बातचीत करने, पत्र लिखने, अपने विचार प्रकट करने और प्रार्थनापत्र आदि भेजने के लिए जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं, वह भाषा का गद्य रूप ही होता है। पिछले पाठों में कविता के संबंध में पढ़ते हुए आप संकेत रूप में यह समझ चुके हैं कि गद्य की भाषा सरल तथा बोधगम्य होती है, जबकि कविता (काव्य) की भाषा लयात्मक और विशिष्ट होती है। गद्य की भाषा सहज, सरल तथा बोधगम्य होने के कारण ही हम अपने विचार आसानी से अभिव्यक्त कर पाते हैं। काव्य में विचार नहीं बल्कि भावनाओं की प्रधानता होती है। यही कारण है कि काव्य की अपेक्षा गद्य का क्षेत्र अधिक विस्त त है। आज निबंध, कहानी, उपन्यास, यात्रा, संस्मरण, समाचार, संपादकीय आदि विधाएँ गद्य के माध्यम से ही पढ़ी-लिखी जाती हैं। इस प्रकार गद्य मानव जीवन के व्यापक पक्षों का स्पर्श करता है। आइए, इस पाठ में जानते हैं कि गद्य को किस तरह से पढ़ा जाना चाहिए, जिससे कि उसे अच्छी तरह समझा जा सके, उस पर पूछे गए प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दे सकें, विचार कर सकें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- गद्य के स्वरूप तथा विकास का उल्लेख कर सकेंगे;
- गद्य के महत्त्व पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- गद्य की विभिन्न विधाओं का परिचय दे सकेंगे;
- गद्य के प्रमुख अवयवों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- गद्य को कैसे पढ़ा जाना चाहिए, यह समझ कर उचित तरीके को अपना सकेंगे;
- पठित सामग्री के आधार पर लाभालाभ; उचित-अनुचित में भेद करने की क्षमता तथा तार्किक शक्ति का विकास कर सकेंगे;
- गद्य रूप में दी गई नवीन सामग्री को पढ़कर उस पर चिंतनमनन कर सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप

आप रोज कुछ-न-कुछ पढ़ते हैं– अखबार, किताबें, विज्ञापन आदि। उनमें ज़्यादातर गद्य होता है। क्या आप बता सकते हैं कि गद्य के कितने रूप आमतौर पर देखने को मिलते हैं? गद्य में क्या-क्या लिखा जाता है। एक सूची बनाइए, जैसे–कहानी, उपन्यास आदि।

1 ....4...7...

2 ....5...8...

3 ....6...9...

6.1 आइए समझें

गद्य का स्वरूप

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि गद्य का लिखित रूप अपेक्षाकृत काव्य के बाद में प्रारंभ हुआ। असल में गद्य को पहले बोलचाल की भाषा माना जाता था, इसीलिए साहित्य अथवा लेखन के क्षेत्र में इसका प्रयोग नहीं होता था। पहले विविध ज्ञान-विज्ञान तथा इतिहास संबंधी विषयों की रचना भी काव्य में ही लिखी जाती थी। किंतु बाद में जैसे-जैसे समाज का विकास होता गया तथा अनुभव और विचारों का क्षेत्र विस्त त होता गया, तो धीरे-धीरे गद्य के महत्त्व को समझा जाने लगा।

गद्य का स्वरूप निर्धारित करते हुए संस्कृत साहित्यशास्त्र में विद्वानों ने इसे कथा, आख्यान आदि नामों से पुकारा। किंतु इसमें कथा साहित्य के अतिरिक्त इतिहास, विज्ञान अथवा चिंतनपरक लेखों पर कोई विचार नहीं किया गया।

हिंदी के आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गद्य के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'दुनिया के सारे व्यवहार गद्य द्वारा चलते हैं, तो दूसरी ओर गूढ़ और जटिल विचारों को व्यक्त करने का उपयुक्त साधन भी गद्य ही है। बातों का बोध कराने के अतिरिक्त हृदय में हर्ष, विषाद, प्रेम, करुणा इत्यादि भावों की व्यंजना के लिए भी गद्य का प्रयोग कम नहीं होता, गद्य की सबसे सरल, व्यापक और सर्वमान्य परिभाषा यही हो सकती है कि जिस भाषा का हम साधारण बातचीत में प्रयोग करते हैं, वही गद्य है। गद्य का लक्ष्य सहज तथा सरल ढंग से अपने प्रयोजन की अभिव्यक्ति करना होता है।'

जिस भाषा का हम सामान्य बातचीत में प्रयोग करते हैं, वही गद्य कहलाता है।

6.1.1 हिंदी गद्य का विकास

आप तो जानते ही हैं कि हिंदी साहित्य को उसके विकास के क्रमानुसार चार कालों में विभाजित किया गया है–आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल। आधुनिककाल के भी विभिन्न चरण हैं जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि। इनमें से हिंदी गद्य का पहली बार साहित्यिक रूप में

भारतेंदु युग में हिंदी गद्य साहित्य का प्रारंभ माना जाता है।

विकास भारतेंदु युग में हुआ। भारतेंदु युग से पूर्व काव्य की भाषा 'ब्रज' भाषा थी। भारतेंदु ने ही खड़ी बोली हिंदी को साहित्यिक रूप में विकसित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसके लिए उन्होंने ब्रज को काव्य तक सीमित रखा और खड़ी बोली को गद्य में अभिव्यक्ति का माध्यम सुनिश्चित किया। साथ ही उन्होंने अनेक विधाओं को अपनाया। उन्होंने भाषणों तथा लेखों के माध्यम से हिंदी खड़ी बोली गद्य का प्रचार किया।

हिंदी गद्य लेखन का प्रारंभ

पहली बार सरकारी स्तर पर हिंदी गद्य के विकास तथा प्रयोग का प्रयास फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद अंग्रेज़ शासकों द्वारा किया गया। आप तो जानते ही हैं कि भारतेंदु युग से पूर्व हिंदी के कई रूप प्रचलित थे। एक तो सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली हिंदी से मिलती-जुलती भाषा थी और दूसरी उर्दू मिश्रित, जो मुगल दरबारों की परंपरागत भाषा थी। ऐसी स्थिति में अंग्रेज़ी प्रशासकों को बहुत कठिनाई होती थी। कोई एक ऐसी भाषा नहीं थी, जिसको सीखकर सामान्य जनता के बीच बातचीत का क्रम बनाया जा सके। अतः अंग्रेज़ अफ़सरों ने इस देश की भाषा सीखने-सिखाने की व्यवस्था फोर्ट विलियम कॉलेज में की। इसमें उर्दू तथा खड़ी बोली हिंदी दोनों भाषाओं की पुस्तकें तैयार करने की योजना बनाई गई। फोर्ट विलियम कॉलेज के गिलक्राइस्ट महोदय ने खड़ी बोली में हिंदी गद्य को स्वतंत्र रूप से भाषा के रूप में स्वीकार किया तथा हिंदी गद्य में पुस्तकें तैयार करने के लिए लल्लूजी लाल तथा सदल मिश्र नाम के दो व्यक्तियों की नियुक्ति की।

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 में कलकत्ता में हुई।

हिंदी गद्य साहित्य के इतिहास में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 की महत्त्वपूर्ण घटना है। इस कॉलेज के प्राध्यापक सर जॉन गिलक्राइस्ट के निरीक्षण में खड़ी बोली गद्य में पुस्तकें लिखवाने की योजना बनी। इस योजना के अंतर्गत लल्लूजी लाल और सदल मिश्र को हिंदी गद्य में पुस्तकें लिखने का कार्य सौंपा गया। फोर्ट विलियम कॉलेज का कार्य आरंभ करने से पहले मुंशी सदासुखलाल 'ज्ञानोपदेश' और सैय्यद इंशाअल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी' लिख चुके थे। उस समय सैय्यद इंशा अल्ला खाँ का विचार था— *'एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले। बस जैसे भले लोग अच्छों से अच्छे आपस में बोलते-चालते हैं।'*

सैय्यद इंशाअल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' नाम की पहली कहानी लिखी।

फोर्ट विलियम कॉलेज के तत्वावधान में लल्लूजी लाल ने 'प्रेमसागर' और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। इन चारों लेखकों में सदासुखलाल ने 'सुखसागर' और इंशाअल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' में हिंदी गद्य के भावी साहित्यिक रूप का आभास दिया है। इस संबंध में लल्लूजी लाल का वक्तव्य है, *'संवत् 1860 (सन् 1803) में लल्लूजी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र–अवदीच आगरेवाले ने विसकासार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में कह, नाम 'प्रेमसागर' धरा।'*

संस्थाओं का योगदान

हिंदी खड़ी बोली गद्य के जन्मदाता मुंशी सदासुखलाल, इंशाअल्ला खाँ, लल्लूजी लाल और सदल मिश्र के बाद लगभग पचास वर्ष तक ऐसा समय रहा, जिसमें कोई

टिप्पणी

उल्लेखनीय ग्रंथ नहीं रचा गया। पर इस बीच ईसाई धर्म प्रचारकों और कुछ अंग्रेज़ शासकों ने लोगों को हिंदी सिखाने का प्रयास किया, क्योंकि यह सामान्य लोगों के व्यवहार की भाषा थी। भारतीय लोगों में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए ईसाई पादरियों ने खड़ी बोली को अपनाकर इसमें बाइबिल आदि पुस्तकों का अनुवाद करवाया। यही कारण है कि खड़ी बोली के विकास में ईसाई पादरियों का भी योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

लगभग इसी समय ईसाई धर्म प्रचार के विरुद्ध हिंदू शिक्षित वर्ग में अपने धर्म की रक्षा करने की तीव्र भावना जाग उठी, जिससे ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज जैसी संस्थाएँ खड़ी बोली के माध्यम से धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार करने लगीं। ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने वेदांत के सूत्रों का खड़ी बोली में अनुवाद किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अनेक ग्रंथ लिखे, जिनमें 'सत्यार्थ प्रकाश', 'संस्कार विधि', 'वेदों का भाष्य' आदि प्रमुख हैं। स्वामी जी की संस्कृतनिष्ठ भाषा में ओज, हास्य और व्यंग्य काफ़ी मात्रा में विद्यमान है। उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करके सबके लिए हिंदी का पढ़ना और पढ़ाना आवश्यक कर दिया। वे हिंदी को आर्यभाषा के नाम से भी पुकारते थे। पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मुंबई में आर्यसमाज के प्रभाव से हिंदी गद्य का प्रसार और प्रयोग सर्वाधिक रूप से होता रहा। इसी समय पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी ने सनातन धर्म के प्रचार के लिए 'सत्याम त प्रवाह' नामक गद्य ग्रंथ की रचना की। वे बड़े प्रभावशाली वक्ता थे। उनके व्याख्यानों और कथावचनों से पंजाब में हिंदी का बहुत अधिक प्रचार हुआ। उनका 'भाग्यवती' नामक सामाजिक उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुआ था। इसके अतिरिक्त 'धर्म रक्षा', 'उपदेश संग्रह', 'शतोपदेश' आदि उनकी उल्लेखनीय गद्य रचनाएँ हैं।

पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

इस प्रकार हिंदी खड़ी बोली गद्य की धारा दिन-प्रतिदिन पुष्ट होती गई। पचास वर्षों में हिंदी गद्य को आगे बढ़ाने में तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। कलकत्ता से 'उदंत मार्तंड' नामक पत्र निकलना प्रारंभ हुआ। 'बंगदूत', 'बनारस अखबार' और 'सुधाकर' निकला। इसी समय राजा लक्ष्मण सिंह हिंदी का लोकसम्मत रूप लेकर सामने आए। उन्होंने आगरा से सन् 1961 में 'अभिज्ञान शाकुंतलम' का बड़ा ही सरल और सरस हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा लगभग काव्यमय है, जिसमें संस्कृत तथा तद्भव शब्दों का अच्छा प्रयोग हुआ है। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' ने मिश्रित (अरबी-फ़ारसी युक्त) हिंदी को प्रश्रय दिया, जबकि लक्ष्मण सिंह ने हिंदी अपनाई। उन सभी के प्रयत्नों से खड़ी बोली में जीवन का संचार हुआ और भविष्य के लिए गद्य का रूप भी स्पष्ट हो गया।

6.1.2 आधुनिक युग में हिंदी गद्य

भारतेंदु युग

आधुनिक युग का प्रारंभ भारतेंदु के समय से माना जाता है।

भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण

टिप्पणी

भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकार हैं, भारतेन्दु, बालकृष्ण भट्ट प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन, देवकीनंदन खत्री।

मिश्र, बदरीनारायण प्रेमघन, लाला श्रीनिवास दास, गोपालराम गहमरी, अंबिकादत्त व्यास, देवकीनंदन खत्री आदि थे, जिन्होंने नाटक, निबंध, कहानी, उपन्यास आदि गद्य साहित्य की रचना की। भारतेंदु युग में गद्य का विकास तो हो गया था किंतु उस समय के भाषा-रूपों में अनेकता विद्यमान थी।

द्विवेदी युग

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का ध्यान खड़ी बोली गद्य में प्रचलित भाषापरक विविधताओं की ओर गया। हिंदी गद्य को देशज तथा सरल शब्दों में लिखी व्याकरणनिष्ठ हिंदी भाषा माना और उसी के प्रयोग पर बल दिया।

आज हम जिस व्याकरण-सम्मत हिंदी गद्य का प्रयोग करते हैं, उसे बनाने का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को जाता है। इसीलिए इस काल को **द्विवेदी काल** कहा जाता है। द्विवेदी जी के प्रयास से हिंदी व्याकरण संबंधी पुस्तकों का लेखन भी हुआ, जिससे भाषा को शुद्ध तथा सरल ढंग से लिखने में सहायता मिलने लगी।

द्विवेदी युग के प्रमुख रचनाकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, बाबू श्यामसुंदर दास, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाबराय तथा अध्यापक पूर्ण सिंह का नाम अग्रणी है। इन रचनाकारों ने कहानी, उपन्यास तथा निबंध के साथ-साथ विदेशी तथा भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद भी किया, जिससे हिंदी के पाठक अन्य भाषाओं के साहित्य से भी परिचित हो सकें।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा को परिनिष्ठित रूप दिया।

द्विवेदी युग के बाद क्रमशः छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा समकालीन साहित्य में हिंदी गद्य का विकास क्रमशः सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ-साथ वैचारिक बदलावों के अनुसार भी होता रहा। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुभद्रा, कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, पद्म सिंह शर्मा, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, रामकुमार वर्मा, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह आदि के साहित्य में गद्य के विकास का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 6.1

उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. गद्य क्या है?
   (क) साधारण बातचीत की भाषा
   (ख) तुकबंदी युक्त भाषा
   (ग) लय और नाद की भाषा
   (घ) कठिन और न समझ में आने वाली भाषा

2. सर्वप्रथम हिंदी गद्य का साहित्यिक रूप में विकास हुआ–
   (क) द्विवेदी युग में (ग) भारतेंदु युग में
   (ख) छायावाद युग में (घ) रीतिकाल में

3. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई–

(क) सन् 1856 में बंगलौर में (ग) सन् 1902 में दिल्ली में

(ख) सन् 1857 में कलकत्ता में (घ) सन् 1800 में कलकत्ता में

4. देवकीनंदन खत्री किस युग के साहित्यकार थे?

(क) द्विवेदी युग के (ग) रीतिकाल युग के

(ख) भारतेंदु युग के (घ) प्रयोगवादी युग के

5. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी गद्य के विकास में क्या महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था?

(क) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की थी

(ख) भारतेंदु हरिश्चंद को हिंदी पढ़ाई थी

(ग) हिंदी गद्य की व्याकरण संबंधी कमियों को दूर किया था

(घ) मिश्रित हिंदी को प्रश्रय दिया था

6.2 गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ

आज मानव जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो गद्य के विकास से अछूता रह गया है। साहित्यिक अभिव्यक्तियों के साथ-साथ कला, विज्ञान, इतिहास, राजनीति, संस्कृति आदि विषयक रचनाएँ भी आज गद्य के माध्यम से होने लगी है। पढ़ाई-लिखाई तथा छपाई के विकास के साथ ही गद्य का भी निरंतर विकास होता चला गया है। चाहे वह पक्ष-विपक्ष की घटनाओं पर आधारित समाचार समीक्षाएँ हों अथवा व्यक्तिगत अनुभवों को डायरी में लिखने संबंधी क्रिया, सभी कुछ गद्य के माध्यम से सुरक्षित रखा जा सकता है। गद्य द्वारा इतने व्यापक स्तर पर जीवन के क्रिया-व्यापारों को घेरते चले जाने के साथ ही साहित्य विभिन्न प्रकार की विधाओं का भी जन्म हुआ।

इस प्रकार हिंदी गद्य को चार बड़े भागों में विभाजित किया जा सकता है:

1. कथा-साहित्य
2. नाटक
3. निबंध
4. नवीन विधाएँ

1. कथा-साहित्य

कथा-साहित्य में हम उपन्यास, कहानी और लघुकथा का पठन करते हैं। यह अधिकतर द्रुतपठन के लिए प्रयुक्त होता है। यदि आपको पठन में गति बढ़ानी है तो गद्य पठन

में अधिक से अधिक कहानी और उपन्यास पढ़ना अति आवश्यक है। आप कहानी और उपन्यास पढ़ना अपनी आदत बना सकते हैं। इस पठन से मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवृद्धि भी होती है।

कहानी

जीवन अथवा समाज की किसी भी घटना का सुंदर ढंग से चित्रण ही कहानी है। कहानी में कथा का होना आवश्यक है। इसमें विचार निबंध की तरह सीधे-सीधे न प्रकट करके घटना अथवा पात्रों के माध्यम से प्रकट किए जाते हैं। कहानी हमेशा किसी घट चुकी घटना का वर्णन प्रस्तुत करती है।

प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', भगवतीचरण वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, भैरव प्रसाद गुप्त, राजेंद्र यादव, शिवप्रसाद सिंह, शेखर जोशी, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर आदि हिंदी के कई प्रमुख कहानीकार हैं। आप अपनी पाठ्य पुस्तक में मन्नू भंडारी की कहानी 'दो कलाकार' पाठ संख्या–8 में पढ़ेंगे।

उपन्यास

उपन्यास में भी जीवन अथवा समाज में घटित घटनाओं का वर्णन होता है। किंतु उपन्यास में कहानी की अपेक्षा अधिक विस्तार से कथा का वर्णन किया जाता है। कहानी किसी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ होती हैं। इसमें कई उप-कहानियाँ भी एक साथ चलती हैं। उपन्यास जीवन के लंबे समय की घटना को चित्रित करता है, जबकि कहानी में किसी छोटे क्षण की घटना का चित्रण होता है। प्रेमचंद, इलाचंद्र जोशी, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, वृंदावनलाल वर्मा, भगवती चरण वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, यशपाल, अज्ञेय, भैरवप्रसाद गुप्त, शिवप्रसाद सिंह, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, विवेकी राय कमलेश्वर आदि हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार हैं। आप तीसरी पुस्तक के प्रारंभ में वृंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'विराटा की पद्मिनी' नामक उपन्यास पढ़ेंगे।

2. नाटक

नाटक में भी कहानी ही प्रमुख होती है किंतु इसमें कहानी अथवा उपन्यास की तरह घटना का वर्णन नहीं होता बल्कि उस कहानी के पात्रों द्वारा संवाद बुलवाकर और अभिनय के माध्यम से स्थिति का वास्तविक चित्रण करने का प्रयास किया जाता है। नाटक की भाषा बोलचाल के बहुत करीब होती है इसलिए यह साधारण से साधारण मनुष्य को भी समझ में आ जाती है और यदि न भी आए तो नाटक के पात्रों के अभिनय (पात्रानुकूल भाषा) से वह स्पष्ट हो जाती है। नाटक में लेखक जो भी बात कहना चाहता है वह पात्रों के माध्यम से कहलवाता है। अब तो जगह-जगह चौराहों पर नुक्कड़ नाटक भी खेले जाते हैं। सफ़दर हाशमी ने नुक्कड़ नाटकों को पर्याप्त प्रश्रय दिया था। दिल्ली स्थित नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा द्वारा नाटक के लिए पात्रों को शिक्षित किया जाता है।

3. निबंध

निबंध को गद्य-लेखन की कसौटी माना जाता है। सामान्यतः निबंध में किसी विषय पर विचारपूर्ण लेख लिखे जाते हैं। निबंध का अर्थ है– 'बिना बंधन का' अर्थात् **किसी विषय**

पर लिखते समय विचारों के ऊपर कोई बंधन अथवा प्रतिबंध न हो, वह रचना निबंध कहलाती है। निबंध किसी भी विषय पर लिखे जा सकते हैं। इसके लिए आवश्यक नहीं कि केवल साहित्यिक विषयों का ही चुनाव किया जाए। निबंध और लेख में अंतर होता है। लेख केवल अपने विषय पर ही केंद्रित होता है किंतु निबंध में विषय केवल एक माध्यम भर होता है। निबंध में विचारों की श ंखला कहीं से भटककर कहीं भी जा सकती है। विभिन्न शैलियों के आधार पर निबंधों में भेद किए जा सकते हैं; जैसे: ललित निबंध, विचारात्मक निबंध, वर्णनात्मक निबंध आदि। प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्यामसुंदर दास, बाबू गुलाबराय, अध्यापक पूर्ण सिंह, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकीराय आदि हिंदी के प्रमुख निबंधकार हैं। अपने पाठ्यक्रम में आप कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ', हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'कुटज', रामचंद्र शुक्ल का 'क्रोध' आदि निबंध पढ़ेंगे।

4. नवीन विधाएँ

यात्रा-व त्तांत

यात्रा-व त्तांत में लेखक किसी देश, पहाड़ अथवा किसी अन्य स्थान की अपनी यात्रा के अनुभवों को लिखता है। यात्रा के दौरान तरह-तरह की कठिनाइयाँ भी आती हैं, कई रोमांचक अनुभव भी होते हैं तथा आनंद भी प्राप्त होता है। यात्राओं में प्राप्त अनुभवों का वर्णन ही **यात्रा-व त्तांत** कहलाता है। राहुल सांकृत्यायन का 'घुमक्कड़, शास्त्र' ग्रंथ प्रसिद्ध यात्रा-ग्रंथ है। यात्रा संस्मरण के लेखन की परंपरा भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय से ही प्रारंभ हो गई थी। देवकी नंदन खत्री की 'बद्रिकाश्रम यात्रा', गोपालराम गहमरी की 'लंका-यात्रा' का विवरण, अज्ञेय की 'अरे यायावर रहेगा याद' आदि यात्रा-व त्तांत संबंधित चर्चित पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त यशपाल, विष्णु प्रभाकर, राजेंद्र यादव, मनोहर श्याम जोशी, हिमांशु जोशी आदि ने भी कई सुप्रसिद्ध यात्रा-साहित्य लिखे हैं। आपको दूसरी पुस्तक के पाठ संख्या-26 में मोहन राकेश का लिखा 'आखिरी चट्टान' नामक यात्रा-व त्तांत पढ़ने को मिलेगा।

संस्मरण

उचित प्रकार से किसी व्यक्ति अथवा स्थान का स्मरण करना ही **संस्मरण** कहलाता है। संस्मरण में आत्मीयता का होना एक विशिष्ट गुण है। इसमें किसी व्यक्ति से अत्यधिक भावनात्मक जुड़ाव होने के कारण अनुभूत स्म तियाँ और घटनाओं के प्रति निजी द ष्टिकोण का होना स्वाभाविक होता है। संस्मरण विधा अतीत से जुड़ी विधा है। इसमें किसी भी छोटे अथवा बड़े व्यक्ति को तटस्थता से याद कर लिपिबद्ध किया जाता है।

संस्मरण साहित्य के विकास में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी कृत संस्मरण तथा कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के 'दीप जले शंख बजे' ने विशिष्ट योगदान दिया। अन्य संस्मरण लेखन कार्य में संलग्न साहित्यकारों ने 'संस्मरण-माला' लिखीं। विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक का 'मेरा वह बाल्यकाल,' जैनेंद्र द्वारा 'ये तथा वे' और 'गांधी': कुछ स्म तियाँ, आचार्य

टिप्पणी

चतुरसेन के 'सुगंधित संस्मरण' बच्चन के 'नए पुराने झरोखे', अज्ञेय कृत 'स्म ति लेखा', 'आत्मेनपद', 'मन से परे' आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

इस पुस्तक में आप डॉ० रघुवंश पर लिखित डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया का संस्मरण पढ़ेंगे। आशा है यह विधा आपको पसंद आएगी।

व्यंग्य

समाज में फैली बुराई, किसी विचार, परंपरा अथवा घटना का वर्णन करते हुए यदि उसकी खिल्ली उड़ाई जाए, व्यवस्था पर चोट की जाए अथवा हँसती-गुदगुदाती भाषा में उसका चित्रण किया जाए तो वह रचना व्यंग्य कही जाएगी। व्यंग्य में कहानी भी हो सकती है और निबंध की तरह स्वतंत्र विचार भी हो सकते हैं। कुल मिलाकर कहें तो व्यंग्य एक प्रकार का निबंध होता है, जिसमें व्यंग्यात्मक ढंग से किसी विषय का चित्रण होता है।

बालमुकुंद गुप्त की 'शिवशंभु के चिट्ठे', महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'म्युनिसिपैलिटि के कारनामे' श्रेष्ठ व्यंग्य के उदाहरण हैं। आज तो व्यंग्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हो चुका है। आजकल पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य, कला, इतिहास, राजनीति, संस्कृति, विज्ञान आदि किसी भी विषय से संबंधित व्यंग्य अनिवार्य रूप से मौजूद रहते हैं। व्यंग्य के माध्यम से जहाँ किसी विषय की खिल्ली उड़ाई जाती है वहीं उसके पीछे किसी गूढ़ समस्या का समाधान भी ढूँढ़ने का प्रयास किया जाता है। व्यंग्य पढ़ने वाला ऊपर-ऊपर तो हँसता रहता है किंतु उसके हृदय में वह गूढ़ समस्या भीतर तक कचोटती रहती है। प्रमुख व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, गोपाल चतुर्वेदी आदि के नाम आते हैं। इस पाठ्यक्रम में आप हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित ''पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ'', नामक व्यंग्य रचना इसी पुस्तक के पाठ संख्या 10 में पढ़ेंगे।

संपादकीय

हर पत्र-पत्रिका में एक संपादकीय अवश्य होता है। संपादकीय उसे कहते हैं जो पत्र अथवा पत्रिका के संपादक द्वारा लिखा जाता है। संपादकीय को भी अब स्वतंत्र विधा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। अब तक इसे निबंध की श्रेणी में ही रखा जाता था। संपादकीय में संपादक तत्कालीन समस्याओं, घटनाओं पर अपने विचार प्रकट करता है अथवा उस पत्र-पत्रिका से संबंधित समस्याओं पर लेख लिखता है। अखबार तथा पत्रिका के संपादकीय में अंतर होता है। चूँकि अखबार रोज़ निकलता है इसलिए उसका संपादकीय प्रायः समाचारों पर आधारित होता है जबकि पत्रिकाओं की एक निश्चित अवधि होती है इसलिए उनके संपादकीय में किसी सामाजिक मुद्दे अथवा समस्या पर समीक्षात्मक टिप्पणी की जाती है। ये संपादकीय अब पुस्तकाकार रूप में भी उपलब्ध होने लगे हैं।

धर्मवीर भारती, अक्षय कुमार जैन संपादकीय लेखन में प्रमुख हैं। राजेंद्र यादव की 'काँटे की बात' नामक पुस्तकें उनकी संपादकीय टिप्पणियों का ही संकलन है। उनका एक संपादकीय आप इसी पुस्तक के पाठ संख्या–9 में पढ़ेंगे। विद्यानिवास मिश्र, म णाल पांडे,

प्रभाष जोशी, विष्णु खरे, अरुण शौरी, खुशवंत सिंह, कुलदीप नायर आदि कुछ अन्य चर्चित संपादकीय लेखक हैं।

कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, यात्रा, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा, फीचर, पत्र, लघु-कथा, नुक्कड़ नाटक, रेडियो रूपक, परिचर्चा आदि अनेक विधाओं में पर्याप्त साहित्य लिखा जा रहा है। इन नई विधाओं को पत्र-पत्रिकाओं में पर्याप्त स्थान दिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 6.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. निबंध लिखते समय लेखक के विचारों पर.................होता है।

   (क) प्रतिबंध — (ग) कोई न कोई प्रभाव

   (ख) कोई प्रतिबंध नहीं — (घ) दबाव

2. कहानी में ....का होना अनिवार्य है।

   (क) कथा — (ग) कविता

   (ख) विचार — (घ) लेखक

3. नाटक में विचार........................के माध्यम से अभिव्यक्त किए जाते हैं।

   (क) लेखक — (ग) पात्रों

   (ख) कहानी — (घ) घटना

4. हिंदी साहित्य की नवीन विधाओं में कौन–सी विधा सम्मिलित नहीं है–

   (क) संस्मरण — (ग) यात्रा व त्तांत

   (ख) नाटक — (घ) लघु कथा

6.3 गद्य का महत्त्व

संस्कृत की सुप्रसिद्ध सूक्ति के अनुसार 'गद्य कवीनां निकषम् वदन्ति' गद्य का लेखन मूर्धन्य कवियों की कसौटी है। इस कारण ही संस्कृत में भी बहुत से महाकवि गद्य लेखन करते रहे हैं। हिंदी साहित्य के आधुनिककाल के मूर्धन्य कविगण–जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, रामकुमार वर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', धर्मवीर भारती आदि कवियों का गद्य भी उतना ही सुललित और श्रेष्ठ है, जितना कि किसी सुप्रसिद्ध गद्य लेखक का।

ऊपर आपको बताया जा चुका है कि जीवन के समस्त क्रिया-व्यापार गद्य द्वारा ही संचालित होते हैं। अब आप सोचते होंगे कि कैसे? जब गद्य बातचीत द्वारा आसानी से अभिव्यक्त हो ही जाता है तो उसे पढ़ने की क्या ज़रूरत है? लेकिन ज़रा गहराई से सोचिए तो आपको इसके महत्त्व का पता चलेगा।

यदि आप अपने घर से दूर गए हैं और आपका घर के सदस्यों से बातचीत करने का मन हो रहा हो, अपने बारे में बताना चाहते हों, तब आप क्या करेंगे? चिट्ठी में आप किस ढंग से अपनी बात कहते हैं, वह कितनी प्रभावकारी बन पड़ी है, अथवा उसमें आप अपनी पूरी बात ठीक ढंग से कह पाए हैं कि नहीं, यह सब आपकी शैली पर निर्भर करता है। आपके कई मित्र आपको चिट्ठी लिखते होंगे उनमें से ज़रूरी नहीं कि सबकी चिट्ठियाँ आपको प्रभावित करती ही हों। कोई एकाध चिट्ठी ही ऐसी होती होगी जिसे पढ़कर आप प्रभावित होते होंगे और उसी तरह की चिट्ठी लिखने की कोशिश आप भी करते होंगे। यह प्रभावित करने का गुण उसकी लेखन शैली पर निर्भर करता है, और यह शैली गद्य का अध्ययन करके ही प्राप्त की जा सकती है। जब तक अधिक से अधिक और ठीक ढंग से गद्य का अध्ययन नहीं किया जाएगा तब तक प्रभावशाली लेखन शैली का विकास नहीं किया जा सकता।

गद्य के पढ़ने की आवश्यकता केवल साहित्य पढ़ने के लिए ही नहीं होती बल्कि इतिहास, विज्ञान, गणित आदि ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकें हैं, जो गद्य में ही लिखी जाती हैं। जब तक गद्य का अध्ययन नहीं करेंगे तब तक दुनिया के बारे में जानकारी नहीं मिलेगी। आपको यदि कहीं आवेदन भेजना हो तो भी गद्य का ही तो सहारा लेंगे न!

इस प्रकार गद्य को ठीक से पढ़ने का तरीका सीखना चाहिए। उसके प्रभावशाली गुणों को जानना चाहिए।

6.4 गद्य के अवयव

अब आपके मन में प्रश्न उठता होगा कि गद्य को कैसे पढ़ा जाए। गद्य को ठीक ढंग से पढ़ने के लिए सबसे पहले उसके प्रमुख अवयवों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। क्योंकि हर चीज़ कुछ तत्त्वों के सहयोग से बनी होती है। वे ही तत्त्व उस वस्तु के अवयव कहलाते हैं। गद्य के अवयवों की जानकारी आपके लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि जब परीक्षा में गद्य की व्याख्या पूछी जाती है तब आप असमंजस में पड़ जाते हैं कि यह तो स्पष्ट रूप से समझ में आ रही है, इसका अर्थ कैसे लिखा जाएगा, व्याख्या कैसे की जाएगी। किंतु गद्य की व्याख्या करने का मतलब अर्थ लिखना नहीं होता बल्कि उसके अवयवों की व्याख्या करना होता है। जब तक अवयवों से परिचित नहीं होंगे तब तक गद्य को समझना कठिन होगा। गद्य में तीन प्रमुख तत्त्व होते हैं—विचार तत्त्व, भाषा तथा शैली।

6.4.1 विचार तत्त्व

किसी भी गद्य रचना में विचार तत्त्व प्रधान होता है। चाहे वह निबंध हो, कहानी हो अथवा उपन्यास या संपादकीय। इस विचार तत्त्व का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि रचना के रचनाकार के बारे में परिचय प्राप्त किया जाए तथा वह किस काल का रचनाकार है उस काल की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए क्योंकि समय तथा सामाजिक परिवेश के अनुसार ही विचार बनते हैं। फिर उस रचना के पीछे रचनाकार का क्या उद्देश्य है, उसे जान लिया जाए। जैसे उदाहरण के लिए यदि हमें

'कुटज' नामक निबंध पढ़ना है तो पहले हम जान लें कि हजारीप्रसाद द्विवेदी किस काल के रचनाकार हैं, उस काल में किस प्रकार की रचनाएँ की जाती थीं तथा द्विवेदी जी ने उसमें क्या योगदान दिया था। फिर 'कुटज' लिखने के पीछे उनका क्या मन्तव्य था? इस तरह कुटज में जो विचार आए हैं वे स्पष्ट होते चले जाएँगे, नहीं तो आप विचारों को ढूँढ़ने में अंदाज़ लगाते चले जाएँगे, जो व्यर्थ होगा।

रचना में विचार तत्त्वों की व्याख्या के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें कविता की तरह भावनाओं की प्रधानता नहीं होती। इसमें आए एक-एक विचार की गहराई तक जाना होता है। उन तर्कों की जानकारी आपको तभी हो सकती है जब आप उससे संबंधित ग्रंथों का अध्ययन करें। जब आप अध्ययन करेंगे तो पाएँगे कि जो विचार आपके सामने अभी हैं किसी न किसी रूप में और दूसरे रचनाकारों में भी वे पहले से ही मौजूद हैं। आपको इन रचनाओं के समान विचारों की आपस में तुलना भी करनी चाहिए।

6.4.2 भाषा

भाषा विचारों की संवाहिका होती है। जैसे विचार होंगे वैसी भाषा भी हो जाएगी। इसके अलावा भाषा विषय-वस्तु के चुनाव पर भी निर्भर करती है। विषय और वस्तु जिस काल, परिवेश और स्थितियों पर आधारित होते हैं भाषा भी उसी के अनुरूप ढलती चली जाती है। यदि कोई रचनाकार मुगलकालीन समस्या को लेकर रचना करना चाहता है तो उसकी भाषा भी आज की प्रचलित भाषा से भिन्न हो जाएगी क्योंकि जब तक भाषा में यह परिवर्तन नहीं आएगा, तब तक उस रचना में वास्तविकता नहीं आएगी।

हर रचनाकार की अपनी भाषा होती है। यह भाषा संबंधी भेद विभिन्न रचनाकारों के गद्यों का अध्ययन करके ही समझा जा सकता है। भाषा-संबंधी अध्ययन के लिए पर्यायवाची शब्दों का अध्ययन, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का ज्ञान तथा तत्सम और तद्भव शब्दों का भी अध्ययन ज़रूरी है। क्योंकि रचनाकार भाषा को सरल, प्रभावशाली तथा सुबोध बनाने के लिए कई बार मुहावरों का प्रयोग भी करता है, कई देशज अथवा तद्भव शब्दों का भी प्रयोग करता है या किसी प्रचलित शब्द के बदले कोई दूसरा शब्द प्रयोग करता है ऐसी स्थिति में व्याकरण का ज्ञान भी बहुत ज़रूरी होता है। नहीं तो आप लिखते समय विराम चिह्नों, विभक्तियों तथा कारक चिह्नों का गलत प्रयोग कर बैठते हैं।

6.4.3 शैली

गद्य रचना में शैली का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक ही विषय पर अलग-अलग रचनाकारों द्वारा लिखी गई बातें, शैली अलग होने के कारण अलग-अलग रूप में प्रभावित करती हैं। एक पुरानी कहानी है कि एक कवि जब मरने लगा तो उसने अपने दोनों बेटों को बुलाया और कहा कि यह मेरी अधूरी किताब है लेकिन मैं इसे उसे ही पूरा करने के लिए देना चाहता हूँ जो मेरी परीक्षा में पास होगा। उसने खिड़की से बाहर

की तरफ़ एक सूखे पेड़ की ओर इशारा करते हुए दोनों बेटों से उसका वर्णन करने के लिए कहा। उत्तर में बड़े बेटे ने कहा, 'सूखा पेड़ खड़ा है।' छोटे बेटे ने कहा, 'रसहीन व क्ष द ष्टिगोचर हो रहा है।' तुरंत ही कवि ने छोटे बेटे को अपनी पुस्तक सौंप दी।

आपने देखा कि एक ही बात को कहने की शैली अलग होने से प्रभाव में भी अंतर आ जाता है। इसलिए गद्य साहित्य में शैली का अध्ययन बहुत आवश्यक होता है। शैली के अनुसार भाषा का स्वरूप भी बदल जाता है। हर रचनाकार की अपनी शैली होती है किंतु हिंदी गद्य में कुछ प्रचलित शैलियों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

(क) वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली का लक्ष्य होता है किसी वस्तु या व्यापार का वर्णन करना। इस शैली के द्वारा विषय की संपूर्ण जानकारी वर्णन द्वारा प्रस्तुत की जाती है। इससे पाठक की कल्पना जाग्रत होकर विषय का आनंद जगाती है। वर्णनात्मक शैली के द्वारा रचनाकार एक प्रकार से शब्द-चित्र खींचने का प्रयास करता है। 'आखिरी चट्टान' पाठ में आप वर्णनात्मक ही पढ़ेंगे।

(ख) विचारात्मक शैली

इस शैली के द्वारा रचनाकार अपने विचारों को विभिन्न तर्कों द्वारा पाठक के मन में बिठा देने का प्रयास करता है। इस शैली के लिए बातें स्पष्ट रूप में रखी जानी आवश्यक होती हैं इसलिए भाषा साफ और स्पष्ट होती है। किसी भी प्रकार का भाषा संबंधी खिलवाड़ विचारों की श्ंखला को भंग कर देता है। कई बार विचारात्मक शैली में लिखी जाने वाली रचना की भाषा विचार और चिंतन के विषय के अनुरूप दुरूह तथा बोझिल भी हो जाती है। 'कुटज' और 'क्रोध' निबंधों में आप विचारात्मक शैली का आनंद लेंगे।

(ग) कथात्मक शैली

इस शैली का लक्ष्य होता है अपने विचारों को कहानी अथवा घटना के माध्यम से पुष्ट करते हुए कहना। इसलिए इसकी भाषा प्रवाहमयी और सरल होती है। पाठक को लगता है कि वह रचनाकार के विचारों को जबरदस्ती ग्रहण करने पर मज़बूर नहीं है, बल्कि पाठक कहानी के माध्यम से विचारों को ग्रहण करता है और उन पर चिंतनमनन कर उन्हें अपनाने अथवा न अपनाने का निर्णय वह स्वयं लेता है। 'दो कलाकार' और 'अनुराधा' कहानी कथात्मक शैली के ही उदाहरण हैं।

(घ) भावात्मक शैली

इस शैली के द्वारा हर्ष, आह्लाद, करुणा, क्रोध, विस्मय आदि किसी भाव की कामना करने का प्रयास किया जाता है। उपर्युक्त शैलियों के अलावा और भी बहुतसी शैलियाँ अब प्रचलन में आ गई हैं। किंतु इन्हीं चार को मुख्य रूप से आधार बनाया जाता है।

गद्य का अध्ययन करते समय कभी-कभी अलंकारों का भी ज्ञान होना चाहिए क्योंकि कविता की तरह ही गद्य में भी रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग सहज ही अथवा सप्रयास किया जाता है।

पढ़ें कैसे?

गद्य साहित्य का वाचन करते समय कुछ अन्य बातों का ध्यान रखना चाहिए जैसे–

- पढ़ने से पूर्व पुस्तक की भूमिका तथा परिचय अवश्य पढ़ लें, यदि सारांश दिया गया हो तो उसे भी पढ़ें इससे वांछित विषय को पढ़ने में सहायता मिलती है।
- पहले और अंतिम अनुच्छेदों को ध्यानपूर्वक पढ़ें, क्योंकि इसमें मुख्य बातों का निचोड़ दिया जाता है।
- पढ़ते समय विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए रुक-रुक कर पढ़ें। उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिए, नहीं तो कई बार अर्थ बदल जाते हैं। संवादों को ठीक ढंग से बोलने का प्रयास करें, नहीं तो अर्थ बदल जाता है।
- पढ़ते समय बीच-बीच में रुक-रुक कर सोचें नहीं, नहीं तो क्रम बिगड़ जाता है और विषय समझ में नहीं आता, इसलिए तेज़-तेज़ पढ़ने की आदत डालें।

पाठगत प्रश्न 6.3

उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. जिसमें विषय का वर्णन किया जाता है उसे ....शैली कहते हैं।

   (क) कथात्मक | (ग) विचारात्मक
   (ख) वर्णनात्मक | (घ) भावात्मक

2. भावात्मक निबंधों में .... किया जाता है।

   (क) भावनाओं को जगाने का प्रयास ....
   (ख) पाठक को भुलाने का प्रयास ....
   (ग) कहानी सुनाने का प्रयास ....
   (घ) विचारों को तर्कों द्वारा स्थापित करने का प्रयास ....

3. गद्य का अध्ययन करते समय अलंकारों का ज्ञान.........

   (क) नहीं होना चाहिए। | (ग) होना चाहिए।
   (ख) कोई आवश्यक नहीं। | (घ) विषय पर निर्भर करता है।

4. निम्नलिखित कथनों में सही कथन पर सही (√) और गलत कथन पर गलत (X) का निशान लगाइए:

   (क) पढ़ते समय रुक-रुक कर सोच-विचार कर पढ़ना ठीक रहता है। ☐
   (ख) उचित विराम चिह्नों के अनुसार ही पढ़ने में सामग्री समझ में आती है। ☐

(ग) किसी पुस्तक को ठीक से समझकर पढ़ने से पहले उसकी भूमिका पढ़नी आवश्यक है। ☐

(घ) विचारात्मक गद्य को तेज़ी से पढ़ने की आदत डालना ठीक नहीं है। इससे कुछ विचार छूट जाते हैं, सामग्री समझ में नहीं आती। ☐

6.5.1 अपठित गद्य कैसे पढ़ें?

अभी आपने गद्य के विविध रूपों, उसके महत्त्व और विविध शैलियों के बारे में पढ़ा। परीक्षा में आपसे अपठित गद्य पर भी सवाल पूछे जाते हैं। अपठित के नाम से ही आप में से कई लोगों की परेशानी बढ़ जाती होगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। जब भी आप कुछ नया पढ़ना शुरू करते हैं तो वह आपके लिए अपठित ही होता है। पठित और अपठित में अंतर बस इतना है कि पठित की व्याख्या और टिप्पणियाँ आप पहले से पढ़ चुके होते हैं इसलिए वह आपको थोड़ा आसान लगता है। अपठित इसलिए थोड़ा कठिन जान पड़ता है क्योंकि उसके बारे में आपने पहले से पढ़ा नहीं होता। लेकिन अगर अपठित को भी पढ़ने का तरीका सीख लें तो उस पर भी पूछे जाने वाले सवालों को लेकर आपके मन में कोई उलझन नहीं होगी।

आइए, इसे पढ़ना सीखने की शुरूआत एक गद्य खंड के उदाहरण से करते हैं। निम्नलिखित गद्य खंड को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के प्रयास कीजिए। अपनी उत्तर पुस्तिका में इन प्रश्नों के जवाब तलाशने में आने वाली कठिनाइयों को लिखते भी जाइए।

*हमारी धरती ने बापू को जन्म दिया। किंतु इस धरती का यह **सौभाग्य** न हुआ कि जो महापुरुष देश की पराधीनता की बेड़ियाँ काटे और देश की **प्रतिष्ठा** को संसार में ऊँचा ले जाए, वह अपने द्वारा प्रतिष्ठापित स्वतंत्र राष्ट्र में जीवित रहकर विश्वशांति और **विश्वबंधुत्व** का अपना स्वप्न पूरा कर सके। महात्माजी को तो इससे अच्छी म त्यु और क्या मिल सकती थी कि **मानवता** की रक्षा करते हुए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए।*

उपरोक्त गद्यांश को ध्यान से पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) महात्माजी ने हमारे लिए क्या किया?

(ख) उनकी म त्यु कैसे हुई?

(ग) महात्माजी का सपना क्या था?

(घ) उभरे हुए शब्दों के अर्थ लिखिए

- पहला प्रश्न है कि महात्मा जी ने हमारे लिए क्या किया? गद्यांश को पढ़ते हुए आप पहली पंक्ति पर ध्यान दीजिए। उत्तर उसमें छिपा है। इसमें दो बातों पर बल दिया गया है–**पराधीनता की बेड़ियाँ काटने और देश की प्रतिष्ठा को संसार में ऊँचा ले जाने पर।** यही सही उत्तर है। आप इसका उत्तर इस प्रकार लिख सकते हैं–महात्मा जी ने हमारे पराधीन देश की बेड़ियाँ काटीं अर्थात देश को

आज़ादी दिलाई और देश की खोई हुई प्रतिष्ठा को स्थान दिलाया यानी पूरी दुनिया में देश का मान-सम्मान बढ़ाया। देश को इस लायक बनाया कि वह भी दुनिया के आज़ाद देशों की कतार में गर्व से खड़ा हो सके।

- आइए इसी प्रकार दूसरे प्रश्न का उत्तर तलाशते हैं। प्रश्न है कि महात्मा जी की म त्यु कैसे हुई? आप सभी जानते हैं कि गांधी जी की गोली मार कर हत्या की गई थी। लेकिन इस गद्यांश में उसका कोई उल्लेख नहीं है। इसमें दूसरी बात कही गई है। गद्यांश की आखिरी पंक्ति को पढ़िए तो उत्तर स्पष्ट हो जाएगा। इसमें **मानवता की रक्षा करते हुए प्राण त्यागने** की बात कही गई है। तो इसका उत्तर आप लिख सकते हैं कि मानवता की रक्षा करते हुए महात्मा जी की म त्यु हुई थी।
- आइए, अब तीसरे प्रश्न पर ध्यान देते हैं, इसमें महात्मा जी के सपने के बारे में पूछा गया है। दो प्रश्नों के उत्तर तलाश लेने के बाद अब आपको इसका उत्तर तलाशना आसान लगने लगा होगा। इसमें भी दो बातों पर बल दिया गया है। **विश्वशांति** और **विश्वबंधुत्व।** अब आप आसानी से समझ सकते हैं कि गांधी जी के यही दो सपने थे तो इसका उत्तर इस प्रकार लिखा जा सकता है—महात्मा गांधी का सपना था कि विश्वशांति कायम हो, यानी दुनिया में शांति हो, लड़ाई-झगड़े का माहौल न हो और विश्वबंधुत्व अर्थात् पूरी दुनिया के लोग एक दूसरे के साथ भाई-भाई की तरह मिलजुल कर रहें। आपस में प्यार करें।
- चौथा प्रश्न आपकी शब्द शक्ति की पहचान करने के लिए है। शब्दों के अर्थ आप तभी जान सकते हैं जब नियमित शब्द कोश देखें। शब्दों के अर्थ जानें और उनका प्रयोग भी करें—चाहे बोलने के स्तर पर हो या लिखने के। आप तो जानते ही हैं कि शब्द-भंडार तभी बढ़ता है जब उनका प्रयोग करना सीखते हैं। इसलिए नए-नए शब्दों के अर्थ जानने और उनका इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए। आपमें से कई लोग काले छपे शब्दों के अर्थ जानते ही होंगे। लेकिन आइए आपको एक बार फिर से बता देते हैं। ये हाशिए पर दिए जा रह हैं।

आशा है आप अपठित पर आधारित प्रश्नों के उत्तर तलाशने का तरीका जान गए होंगे। यदि फिर भी मुश्किल है तो आइए आपको विस्तार से बताते हैं कि अपठित को पढ़ा कैसे जाना चाहिए। किसी भी गद्य को चाहे वह पठित हो या अपठित पढ़ने का तरीका समान होता है। इसके लिए निम्नलिखित चरणों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

- पढ़ने की गति
- चिंतन-मनन
- विचारों का बोध
- अंतर्निहित उद्देश्यों को समझना
- शब्दकोश देखने की आदत डालना

टिप्पणी

शब्दार्थ
सौभाग्य – किस्मत,
प्रतिष्ठा – मान, सम्मान, इज़्ज़त
विश्व बंधुत्व – दुनिया भर में भाई चारा, किसी प्रकार का भेदभाव या झगड़ा न होना
मानवता – ऐसा व्यवहार जो मनुष्य के हित में हो।

1. पढ़ने की गति

कोई भी पुस्तक पढ़ते समय आप किन बातों का ध्यान रखते हैं? क्या पढ़ते समय बीच-बीच में दूसरे काम भी करते रहते हैं? कुछ सोचते या लोगों से बातें भी करते रहते हैं? अगर पढ़ते समय ऐसा करते हैं तो क्या पढ़ी हुई बातें आप को पूरी तरह याद रह जाती हैं? नहीं न? जी, पढ़ते समय एकाग्रता बहुत ज़रूरी है। अगर आपका ध्यान दूसरी तरफ़ होगा तो पढ़ी हुई चीज़ें ठीक से याद नहीं रह पाएँगी। इसी तरह अगर पढ़ने की आपकी गति ठीक नहीं होगी तो एक ही पाठ को पढ़ने में आपको काफ़ी समय लग जाएगा। इसलिए पढ़ने के लिए ज़रूरी है कि आप तेज़ गति से और पाठ को पूरी तरह समझते हुए पढ़ें। पढ़ते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है–

- पढ़ते समय पूरा ध्यान पाठ पर केंद्रित हो।
- जल्दी-जल्दी पढ़ें और मन में पढ़ें, बोलकर या देर तक रुक कर नहीं पढ़ें।
- जहाँ भी कोई बात समझ में नहीं आए या लगे कि पीछे पढ़ी हुई कोई बात छूट गई है तो वहीं रुक कर उसे पूरी तरह समझने ही कोशिश करें। उस अंश को बार-बार पढ़ें। पूरी तरह समझ में आने के बाद ही आगे बढ़ें।
- जहाँ आवश्यक हो, और सुविधा उपलब्ध हो, पाठ से संबंधित संदर्भ को भी समझने या दूसरी पुस्तकों, माध्यमों से जानने का प्रयास करें।

2. चिंतन-मनन

कोई भी पाठ आप तभी अच्छी तरह समझ पाते हैं जब उसमें लिखी बातों को समझने के साथ-साथ उस पर चिंतन-मनन करें। आप कुछ पढ़ते होंगे तो उसमें ज़रूर कोई-न-कोई ऐसी बात मिल जाती होगी जो आपके मन में देर तक टिकी रह जाती होगी। उसके बारे में चलते-फिरते सोचते रहते होंगे। उसे अलग-अलग संदर्भों से जोड़ने का प्रयास करते होंगे। उस पर आपके मन में तरह-तरह के सवाल भी उठते होंगे। यही चिंतन-मनन है। अपने भीतर चिंतन-मनन की आदत विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि आप पढ़ी हुई बातों पर तर्क करना सीखें। उस पर जितने भी तरह के सवाल आपके भीतर पैदा हो सकते हैं उनके जवाब तलाशने की कोशिश करें। जैसे जब भी कुछ पढ़ें, आप सोचें कि ऐसा क्यों लिखा गया है? इसका अर्थ क्या है? उस बात की आप के संदर्भ में प्रासंगिकता क्या है? किन परिस्थितियों या स्थितियों में ऐसा लिखा गया है? अगर ऐसा नहीं लिखा जाता तो क्या फ़र्क पड़ता? और अगर ऐसा नहीं लिखा जाना चाहिए तो कैसे और क्या लिखना ज़्यादा उचित होता आदि।

इसके अलावा छपी हुई सामग्री का अर्थ यह नहीं लगा लेना चाहिए कि जो कुछ लिखा है वह सही ही है। बिना अपने तर्कों पर उसे परखे पूरी तरह सही न मान लें। उस पर तरह-तरह से तर्क करें फिर निष्कर्ष निकालें।

इस तरह तर्क करने से आप पाठ को न सिर्फ़ चीज़ों को अच्छी तरह समझ सकेंगे बल्कि वह पाठ आपके मन में काफ़ी समय तक बना रहेगा। उस में कही गई बातों का बोध अच्छी तरह हो सकेगा।

क्रियाकलाप 6.2

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए:

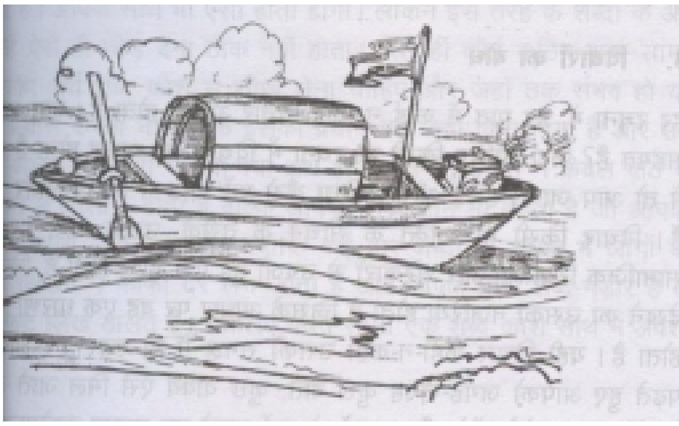

चित्र 6.1

अब इसे किसी कागज़ से ढक दीजिए और फिर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

1. क्या चित्र में झंडा था? यदि था, तो वह किस दिशा में फहरा रहा था?

   ....

2. क्या पतवार में हैंडल लगा हुआ था?

   ....

3. क्या वहाँ कोई झरोखा था? यदि हाँ तो वह नाव के किस ओर था?

   ....

आशा है आपने इन सभी सवालों का जवाब दे दिया होगा, लेकिन महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आपने ये जवाब किस आधार पर दिए? क्या आप बता सकते हैं? यहाँ लिखिए:

....

....

अब अपना उत्तर इस व्याख्या से मिलाइए

आमतौर से लोग चित्र की आकृति अपने मन में बना लेते हैं। इसके बाद उसके बारे में प्रश्न पूछे जाने पर उसके संबंधित हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जैसे कि उपर्युक्त चित्र में झंडे के बारे में पूछे जाने पर आपने नाव के अगले हिस्से पर ध्यान दिया होगा। इसके बाद आपसे नाव के पिछले हिस्से में लगी पतवार के बारे में पूछा गया। अनुसंधान से यह साबित होता है कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति समूची नाव की आकृति से

गुजरता हुआ पतवार तक पहुँचता है। यही कारण है कि नाव के पीछे के हिस्से की तुलना में बीच के हिस्से के बारे में प्रश्न का उत्तर देते समय लोग कम समय लगाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि एक बार जब हम मानसिक आकृति बना लेते हैं, तो हम उस पर उसी तरह नज़रें दौड़ाते हैं, जैसे कि वास्तविक आकृति पर।

3. विचारों का बोध

हर रचना में, हर पाठ में कोई न कोई विचार अवश्य होता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? जरा सोचिए किसी भी रचना में विचारों का महत्त्व होता है। विचार के बारे में तो आप जानते ही हैं और 'कविता कैसे पढ़ें' पाठ में आप विस्तार से पढ़ भी चुके हैं। विचार किसी भी व्यक्ति के सोचने के तरीके, उसके आस-पास के वातावरण, सामाजिक स्थितियों और संस्कारों से उपजी हुई एक द ष्टि होती है, किसी भी चीज को देखने का उसका नज़रिया होता है जिसके आधार पर वह एक धारणा बनाने पर विवश होता है। यही विचार कहीं-न-कहीं उसकी समझ में भी उतर कर आता है। कई बार पढ़ते हुए आपको जगह-जगह कुछ बातें, कुछ वाक्य ऐसे मिल जाते होंगे जिन्हें आप रेखांकित कर लेते होंगे और दूसरों से बातें करते हुए उनका इस्तेमाल करते हैं। जैसे रहीम, कबीर, दादू, रैदास, तुलसी, सूर आदि के दोहों/पदों को ही ले लीजिए। लोग उनका प्रायः बातचीत में इस्तेमाल करते हैं। यानी उनमें कोई-न-कोई विचार ऐसा होता है जो आपके मन को छू जाता है।

पुस्तक पढ़ते समय लेखक या कवि के इन विचारों का बोध भी आवश्यक होता है। विचारों का बोध आपको सिर्फ़ पढ़ लेने से ही नहीं हो पाता। जब आप उन्हें अपने परिवेश, वातावरण और स्थितियों से जोड़ कर देखते हैं, उनसे उनकी तुलना करते हैं, तभी वे ठीक ढंग से समझ में आती हैं। इसके अलावा आपने जीवन में जो कुछ पढ़ा, समझा या सीखा है वे सब भी इन विचारों के बोध में सहायक होते हैं। इसलिए विचारों के बोध के लिए आपको पाठ्य पुस्तकों के अलावा भी बहुत-सी और अलग-अलग विषयों की पुस्तकें पढ़ने की आदत डालना जरूरी है। अपने आस-पास की चीज़ों को देखना, उनके बारे में चिंतन करना, लोगों से विचार-विमर्श करना भी इसके लिए ज़रूरी है। विचारों के बोध के लिए आप में चिंतन-मनन की आदत विकसित होना एक अनिवार्य शर्त है।

4. अंतर्निहित उद्देश्यों को समझना

जिस तरह हर रचना में विचार छिपे होते हैं, उसी तरह हर रचना का कोई-न-कोई उद्देश्य होता है। लेखक या कवि अपनी रचना के माध्यम से कोई-न-कोई संदेश देना चाहता है, किसी समस्या को उठाने की कोशिश करता है और उस पर पाठक को विचार करने-सोचने को उकसाना चाहता है। क्या आपने ऐसा महसूस किया है? ज़रूर किया होगा। कहने का अर्थ यह है कि किसी भी रचना को पढ़ने का अर्थ यह भी है कि उसके उद्देश्यों को पूरी तरह समझा जाए और ऐसा तभी हो सकता है जब आप पाठ को ठीक से पढ़ेंगे, समझेंगे, उस पर चिंतन-मनन करेंगे और अपनी कल्पना शक्ति के बल पर उसके विविध पक्षों को मन में उतारने की कोशिश करेंगे।

5. शब्दकोश देखने की आदत

कोई भी पुस्तक या पाठ को पढ़ते समय प्रायः ऐसा होता है कि कुछ ऐसे शब्द सामने आते हैं जिसका अर्थ हमें ठीक-ठीक मालूम नहीं होता। प्रायः हम उनके निहितार्थों से काम चला लेते हैं। आपके साथ भी ऐसा होता होगा। लेकिन इस तरह के शब्दों के अर्थ जाने बिना उन्हें ऐसे ही छोड़ देना ठीक नहीं होता। जैसे ही कोई कठिन शब्द सामने आए तुरंत उसका अर्थ शब्द कोश से सीख लेना चाहिए और जहाँ तक संभव हो यह भी जानने का प्रयास करना चाहिए कि इसका प्रयोग वहाँ क्यों किया गया है और उस शब्द के अलग-अलग स्थितियों में क्या-क्या अर्थ हो सकते हैं। इससे न केवल पाठ या चित्र को समझने में आसानी होती है बल्कि आपका शब्द-ज्ञान भी बढ़ता है जो आपको कुछ भी लिखते समय काम आता है। क्योंकि कई बार शब्दों के अभाव में लोगों को किसी बात को लिखने में काफ़ी देर लग जाती है और आपके पास शब्द-भंडार है तो आप उसे फटाफट लिख डालते हैं। इसलिए पढ़ते समय एक शब्द कोश साथ में अवश्य रखना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 6.4

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

घर में पिताजी पाँचों समय नमाज़ पढ़ते, हमें उनके साथ नमाज़ पढ़ना अच्छा लगता। बाद में यह आदत ही बन गई। कभी-कभी मानस भटकता, कभी हमारा ध्यान न टिकता लेकिन पिताजी उस पर ज़ोर देते। मैं सदा से आस्तिक रहा हूँ और मुझे ऐसा लगता है कि आस्था आप में या तो होती है या नहीं होती। और जब यह आप में गहन रूप से होती है तो लगभग जीवन-भर ही सुख और दुख में यह आपका सम्बल होती है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि भले मैं पाँच समय न करता होऊँ, लेकिन प्रार्थना मेरे रोज़मर्रा के जीवन में लगातार घटित होती है। स्टूडियो में मेरा काम प्रार्थना से शुरू होता है। यह कुछ माँगना नहीं है। कुछ ही क्षण होते हैं, एकाग्रता के कुछ मिनट। कभी कोई पद, कभी कुछ भी नहीं। इससे आशीर्वाद या ग्रेस की प्राप्ति होती है।

मैं किसी भी रचना के पीछे की विचार-प्रक्रिया के महत्त्व को नहीं नकारता। बहुत विचार करना पड़ता है, लेकिन सिर्फ़ विचार से काम नहीं बनता। टेकनीक और माध्यम पर पकड़ काम नहीं आते। मेरा द ढ़ विश्वास है कि साधना और एकाग्रता अपरिहार्य है। चित्रकारी सिर्फ़ विचार-प्रक्रिया के ही द्वारा नहीं होती। चित्रकारी के लिए एकाग्रता बहुत ज़रूरी है। रचना से तादात्म्य बहुत ज़रूरी है। लेकिन तनाव का एक मुकाम ऐसा आता है जब विचार-प्रक्रिया धीमी हो जाती है और सहज-बुद्धि हावी हो जाती है। यह हावी होती ही जाती है और मैं खुद से यह पूछना तक छोड़ देता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ? बस विचार है और उसे कैनवास पर उतारता मैं। विचार-प्रक्रिया उसका एक हिस्सा भर है। और आप उस मुकाम पर पहुँच जाएँ जिसे मूड, वातावरण

टिप्पणी

कहते हैं (फ्रेंच लोग उसे ग्रेस की स्थिति कहते हैं), जहाँ तो चीज़ें हो ही जाती हैं। मानस प्रत्यक्ष ही सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। मेरा अपना अनुभव इसका प्रमाण है। कभी-कभी ऐसा होता है कि आपके सामने एक खाली जगह भर होती है, और ऐसा लगातार कई दिन तक चलता है। आपको बोध नहीं हो रहा। आप उसे देख ही नहीं पा रहे। आंतरिक द ष्टि विकसित नहीं हो रही, वह मौजूद तक नहीं है। मेरा पूरा विश्वास है कि दैवी शक्तियों का सहयोग न हो तो आप कला का स जन नहीं कर सकते। दरअसल, चित्रकारी मैं नहीं करता। एक कलाकार के लिए दैवी शक्तियों का सहयोग बहुत ज़रूरी है।

अब आप उपरोक्त गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. आप जानते हैं बचपन से किसी बात को करते-करते वह आदत में परिवर्तित हो जाती है और फिर यही आदत संस्कार बन जाती है। इस बात के द्वारा लेखक ने अपने किन संस्कारों की चर्चा की है?
2. चित्रकारी के लिए ही नहीं, किसी भी कार्य के लिए एकाग्रता बहुत ज़रूरी है, कैसे?
3. ''जब कोई भी काम मन से और उसमें पूरी तरह डूबकर किया जाए तो वही सच्ची प्रार्थना या पूजा है।'' यह भाव गद्यांश की किन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है, उन्हें उद्ध त कीजिए।
4. लेखक ने दैवी शक्ति के सहयोग की बात कही है, इसका क्या तात्पर्य है?

आइए, अब इन प्रश्नों के उत्तर उत्तरमाला में दिए उत्तरों से मिलान करके देखें।

....

....

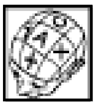

6.6 आपने क्या सीखा

1. सामान्य बोलचाल की भाषा को गद्य कहते हैं।
2. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद से गद्य को और अधिक प्रश्रय मिला। साहित्य के स्तर पर गद्य का पहली बार भारतेंदु हरिश्चंद्र के काल में विकास हुआ।
3. गद्य में निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा, संस्मरण, व्यंग्य, संपादकीय आदि विधाओं की रचना होती है। विषय, समय और परिस्थिति के अनुसार इनकी भाषा बदल जाती है।
4. गद्य को पढ़ते समय उसके विचार तत्त्व, भाषा तथा शैली पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
5. गद्य के साहित्यिक रूप को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

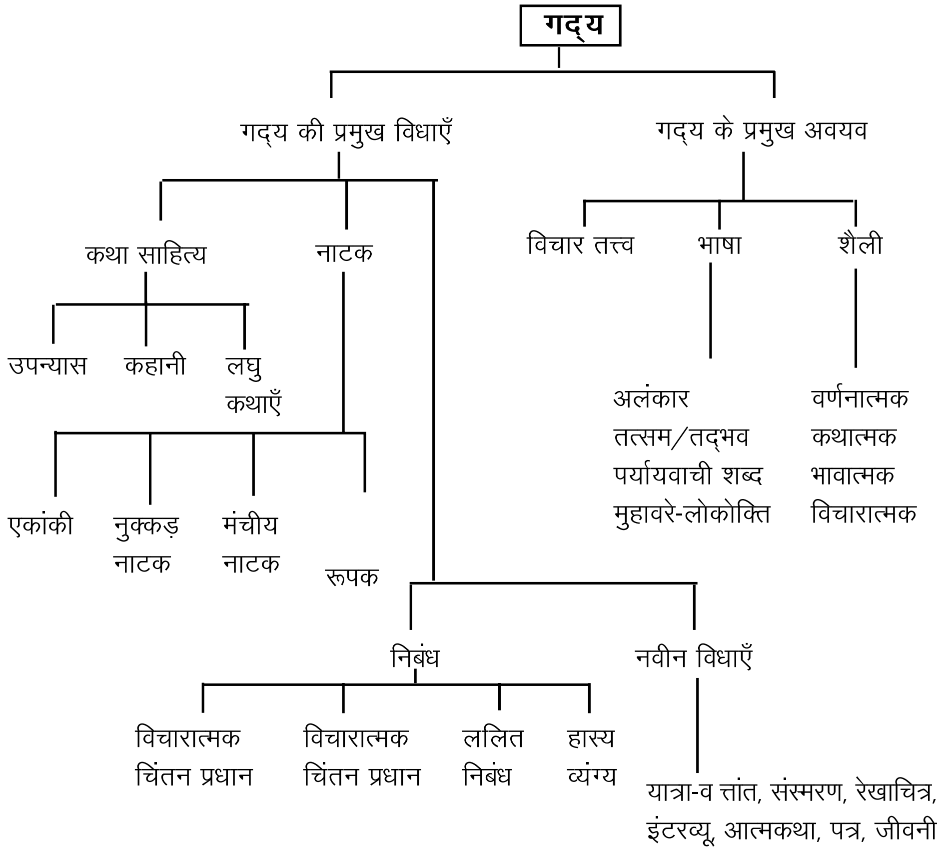

6.7 योग्यता विस्तार

किसी साहित्यिक पत्रिका से कोई एक नवीन विधा में लिखी सामग्री पर संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

6.8 पाठांत प्रश्न

1. गद्य की परिभाषा लिखते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. गद्य की प्रमुख विधाओं का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
3. गद्य की किन्हीं तीन शैलियों का वर्णन कीजिए।
4. गद्य के विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. कल्पना कीजिए आपका प्रिय मित्र पहली बार आपसे सिगरेट पीने के लिए कहता है और तर्क देता है कि एक बार पीने में कोई हर्ज़ नहीं है। देखना तो चाहिए कैसा लगता है। अब आप अंतर्द्वंद्व की स्थिति में हैं। क्या करें और क्या न करें। आपके मन में अलग-अलग विचार उठते हैं–

   (क) प्रिय मित्र की बात माननी चाहिए। एक बार सिगरेट पीने से आदत थोड़े ही बन जाएगी। 'ट्राई' करने में हर्ज़ ही क्या है।....

टिप्पणी

6. किसी नई सामग्री को पढ़कर समझने के लिए पढ़ने की गति, चिंतन-मनन, विचारों का बोध, सामग्री में अंतर्निहित उद्देश्य को समझना तथा किसी नए शब्द के अर्थ को जानने के लिए शब्दकोश देखना बहुत ही आवश्यक है।

(ख) किसी ने देख लिया तो ...? घर पर किसी को पता लग गया...?

(ग) यदि इसकी आदत पड़ गई तो कोई बीमारी भी हो सकती है...।

(घ) प्रिय मित्र का कहना नहीं माना तो दोस्ती टूट जाएगी। वह क्या सोचेगा? डरता है?

(ङ) कुछ भी हो मैं तो सिगरेट नहीं पीऊँगा। उसे भी समझा दूँगा। जो काम छिपकर करना पड़े वह गलत है, अतः मैं नहीं करूँगा।

- उपर्युक्त स्थितियों में से आप किसका चयन करेंगे और क्यों?
- किनका चयन नहीं करेंगे और क्यों?

तर्क देकर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

6. (क) निम्नलिखित शब्दों को कोश-क्रम से लगाइए–

• विश्वबंधुत्व	• अंबु	• मानवता	• अंबुज
• प्रतिष्ठा	• अंबर	• पराधीन	• आभार
• सौभाग्य	• म त्यु	• संक्षिप्त	• मनका
• शैली	• मानसिक	• परिभाषा	• मौलिक
• पंकज	• व्यवहार	• विधाओं	• नागफनी
• बेल	• पीपल	• विकास	• गुलमोहर
• विकल	• उज्ज्वल	• अंजु	• निजात
• अनार	• न्योछावर	• त्योहार	• दीवाली

(ख) किसी अच्छे हिंदी के शब्दकोश में उपर्युक्तऽशब्दों को ढूँढ़िए तथा उनके बारे में अतिरिक्त जानकारी हासिल कीजिए। बताइए अर्थ के अतिरिक्त आपने और क्या-क्या पाया?

7. निम्नलिखित लेख पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आत्महत्या कोई भी लड़की अकारण नहीं करती। आत्महत्या के पीछे ठोस कारण होता है। सबसे बड़ा कारण होता है व्यक्ति का अपने आपको असहाय, लाचार, घिरा हुआ, सामर्थ्यविहीन और अकेला पाना। इन तत्त्वों की उपस्थिति कहीं-न-कहीं हर व्यक्ति के इर्द-गिर्द होती है मगर हर व्यक्ति आत्महत्या नहीं करता। कोई इस घिराव से स्वयंमेव निकल जाता है कोई सायास निकलता है, किसी को समय निकाल देता है। वस्तुतः यह असहायता एक मानसिक स्थिति होती है, जो व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न होती है। फिर भी यह पूरी तरह वैयक्तिक नहीं होती। इसकी जड़ें समाज में होती हैं। समाज के रीति-रिवाज़ों, नियमों-व्यवस्थाओं और उसकी प्रतिक्रियाओं में होती हैं।

कुछ लड़कों ने प्रेम में असफल होकर आत्महत्या की। 'प्रेम में असफल होकर आत्महत्या करना' अब एक निहायत ही चालू मुहावरा है। इसे अब एक स्वयंसिद्ध सूत्र के रूप में स्वीकार कर लिया गया है, इसमें से अब कोई बड़ी सनसनी जन्म नहीं लेती। प्रेमिका को प्रेमी ने ठुकरा दिया तो प्रेमिका आत्महत्या कर लेती है। प्रेमी और प्रेमिका दोनों एक-दूसरे को नहीं ठुकराते, मगर उनके परिवार वाले उनके प्रेम को स्वीकार नहीं करते इसलिए उनमें से कोई भी आत्महत्या कर लेता है अथवा दोनों ही आत्महत्या कर सकते हैं, कोई भी कारण आत्महत्या में घटित हो सकता है। और ये कारण स्थूल रूप में इतने अधिक सामान्यीकृत हैं कि प्रायः इनके भीतर झाँकने की कोशिश तक नहीं होती।

आखिर एक लड़का प्रेम करने वाली लड़की को धोखा क्यों देता है? एक लड़की क्यों अपने प्रेमी को छोड़ देती है? अपने लड़के या लड़की के प्रेम के विरोध में परिवार क्यों खड़ा हो जाता है? जब प्रेमी की आत्महत्या तक ले जाने वाली किसी घटना के सापेक्ष इन सवालों को खड़ा करते हैं तो बहुत-सी प्रचलित सामाजिक प्रव त्तियों से मुठभेड़ होने लगती है। जिस लड़की ने बहुमंजली इमारत से कूदकर आत्महत्या की वह आखिरी समय तक मोबाइल फोन के माध्यम से अपने प्रेमी के संपर्क में थी। लेकिन यह प्रेमी उसको यह अतिवादी कदम उठाने से रोक नहीं सका। अपने आखिरी समय तक वह अपने परिवार के संपर्क में थी। लेकिन परिवार उसकी मनःस्थिति को नहीं भाँप सका। परिवार के सदस्य यह अनुमान नहीं लगा सके कि लड़की आत्महत्या कर सकती है। क्यों हुआ ऐसा?

इसमें संदेह नहीं कि प्रेम एक तीव्र आवेग वाला भाव है। इसका आवेग व्यक्ति को सिर्फ एक प्रवाह में बहने को बाध्य कर देता है। इसकी दिशा इतनी आग्रहपूर्ण होती है कि या तो हमें वह कर लेने दो या हमें वह दे दो जो हम चाहते हैं अन्यथा हम अपने जीवन को पूरी तरह निरर्थक समझेंगे और इसे समाप्त करने से भी नहीं चूकेंगे। हमारे प्रेमी या प्रेमिका को हक नहीं कि वह हमें ठुकराए या हमें छोड़कर किसी और के पास जाएँ। हमारे माँ-बाप को कोई अधिकार नहीं कि वे हमारे प्रेम को परवान चढ़ने से रोकें। लेकिन प्रेम के मामले में प्रायः ऐसा ही होता है। और उसकी प्रजातियाँ भी ऐसी होती हैं।

दरअसल, आज युवाओं की प्रेम संस्कृति बदल गई है। एकनिष्ठता का मूल्य सूचकांक इस दौर में बहुत नीचे आ गया है। एक संबंध के दौरान अगर दूसरा कोई आकर्षक अवसर सामने आ जाता है तो लड़के-लड़कियों को अपने प्रेम को व्यक्तियांतरित करने में कोई अपराध बोध नहीं सालता। और ऐसे में जो लड़का या लड़की अधिक ईमानदारी या अधिक एकनिष्ठता के आग्रह से ग्रसित होते हैं वे अपने आपको अकेला, असहाय या नकारा मानने लगते हैं और कभी-कभी अतिवादी कदम उठा जाते हैं। वे यह स्वीकार नहीं कर पाते कि उनके साथ जो हो रहा है वह एक संभव स्थिति है, और उनके लिए अवसर समाप्त नहीं हुए हैं। वे तात्कालिक स्थिति को ही अंतिम और निर्णायक मान लेते हैं, और उसी के प्रभाव में कदम उठा लेते हैं। और दूसरी बात यह कि उस समय उनमें यह समझने की क्षमता नहीं होती कि उनका प्रेम संबंध भी एक सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक-धार्मिक तत्त्वों के पारस्परिक संबंधों की उपज है, जिसकी परिपाटी इनकी विकृतियों और विशिष्टताओं के अनुरूप कुछ भी हो सकती है।

इसी तरह माँ-बाप भी सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के बदलाव को महसूस करते हुए भी अपने आपको पारंपरिक सोच से अलग नहीं कर पाते। विशेषकर परिवार की लड़की का प्रेम प्रसंग उन्हें आज भी पारिवारिक मर्यादा का उल्लंघन और अवैध प्रतीत होता है। परिणामत: जब कोई ऐसा प्रेम-प्रसंग उनके सामने उजागर होता है तो लड़की उनके लिए खलनायिका बन जाती है और वे उससे उसी तरह से व्यवहार करने लगते हैं। कुल मिलाकर वर्तमान स्थितियों के प्रति समझदारी के प्रसार की अधिक ज़रूरत है ताकि दुर्घटनाओं से बचा जा सके।

(i) भावावेश में उठाए गए कदम मनुष्य की कमज़ोरी के परिचायक हैं, उनसे कैसे बचा जा सकता है?

(ii) आत्महत्या करने का सबसे बड़ा कारण लेखक क्या मानता है और क्यों?

(iii) लेखक असहायता की जड़ें समाज में, समाज के रीतिरिवाज़ों, नियमों, व्यवस्थाओं और उसकी प्रतिक्रियाओं में मानता है क्यों? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(iv) 'प्रेम एक तीव्र आवेग वाला भाव है।' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(v) यदि आप उस प्रेमी के स्थान पर होते तो क्या आप आत्महत्या जैसा अतिवादी कदम उठाने की कोशिश करते? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(vi) आत्महत्या जैसा अतिवादी कदम उठाने का प्रमुख कारण लेखक क्या मानता है?

(vii) यदि आपके घर में आपकी बहन या बेटी प्रेम के दौर से गुजर रही हो तो आप उसका ध्यान किस प्रकार रखेंगे?

(viii) लेखक प्रेम संबंध को एक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक तत्त्वों के पारस्परिक संबंधों की उपज क्यों मानता है? अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

6.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न के उत्तर

6.1 1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)

6.2 2. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख)

6.3 1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (क) X (ख) √ (ग) √ (घ) √

6.4 1. लेखक को बचपन में नमाज़ पढ़ने की प्रेरणा अपने पिता से मिली। धीरे-धीरे उसकी आदत बन गई और बड़े होकर यही आदत संस्कार बन गई। वह अपने प्रत्येक कार्य को प्रार्थना के रूप में करने लगा।

2. किसी भी कार्य को करने के लिए उस पर विचार करना टेकनीक या माध्यम महत्त्व तो रखते हैं परंतु एकाग्रता इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। एकाग्र होकर किए गए कार्य में अन्य बातें, नगण्य हो जाती हैं। एकाग्रता से तो कार्य जैसे अपने आप होता जाता है।

3. ''मैं तो यहाँ तक कहूँगा............. प्रार्थना से शुरू होता है।

4. जब हम किसी भी कार्य को तल्लीनता और एकनिष्ठता से करते हैं और पूरी तरह से उसमें भीग जाते हैं, तब ऐसा एहसास होता है कि दैवी शक्ति का सहयोग भी मिल रहा है। उस समय हमारे लिए कर्म ही प्रधान होता है। निःस्वार्थ रूप से किया गया कार्य एक प्रकार की आत्मतुष्टि देता है, हम पर ईश्वर की कृपा है।